REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
(आधुनिक भारतीय इतिहास के विशेष संदर्भ में)

डॉ. डी. पी. ग्वालवंशी
सहायक प्राध्यापक (इतिहास-विभाग) , शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी (म०प्र०)

सारांश –

वर्षो के कालक्रम में देश में धीरे-धीरे उग्र राष्ट्रवाद (जिसे गरमपंथ भी कहते है) का विकास होता आ रहा था। यह १९०५ के बंगाल-विभाजन विरोधी आंदोलन में अभिव्यक्त हुआ। अपने आरंभिक काल में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने अधिकारिक लोगों को विदेशी प्रभुत्व की बुराइयों तथा देशभक्ति की भावना विकसित करने की आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाया था। उसने शिक्षित भारतीयों को आवष्यक राजनीतिक प्रशिक्षण दिया था। वास्तव में उसने जनता की भावना को ही बदल दिया था तथा देश में एक नए जीवन का संचार किया था। साथ ही साथ, राष्ट्रवादियों की एक मांग मानने में ब्रिटिश सरकार की असफलता ने राजनीति चेतना-प्राप्त लोगों में उस समय वर्चस्व प्राप्त नरमपंथी नेतृत्व के सिद्धांतों व विधियों के प्रति असंतोश पैदा कर दिया था। नरमपंथी राष्ट्रवादियों की मांगें मानने की जगह ब्रिटिश शासक उनकी हंसी उड़ाते और उन्हें नीची निगाहों से देखते थे। परिणामस्वरूप सभाओं, प्रार्थनापत्रों, स्मरणपत्रों और विधायिकाओं में भाषणों की जगह और भी जोरदार राजनीतिक कार्रवाइयों और तरीकों की मांगें उठने लगीं। इस तरह सांस्कृतिकता के साथ राश्ट्रवाद को आंदोलनों, उत्सवों, समारोहो के माध्यम से जनजागृति लाई गई यह भारत की आजादी के लिए किया गया अनूठा प्रयास था। अतः इससे २०वीं सदी के आरंभ में उग्र राश्ट्रवादी संप्रदाय को एक अनुकूल राजनीतिक वातावरण प्राप्त हुआ।

मुख्यशब्दः- सांस्कृतिक राष्ट्रवादए राष्ट्रीय चेतना एवं उग्र राष्ट्रवादी विचार ।

प्रस्तावनाः-

वर्षो के कालक्रम में देश में धीरे-धीरे उग्र राष्ट्रवाद (जिसे गरमपंथ भी कहते है) का विकास होता आ रहा था। यह १९०५ के बंगाल-विभाजन विरोधी आंदोलन में अभिव्यक्त हुआ। अपने आरंभिक काल में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने अधिकारिक लोगों को विदेशी प्रभुत्व की बुराइयों तथा देशभक्ति की भावना विकसित करने की आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाया था। उसने शिक्षित भारतीयों को आवष्यक राजनीतिक प्रशिक्षण दिया था। वास्तव में उसने जनता की भावना को ही बदल दिया था तथा देश में एक नए जीवन का संचार किया था। साथ ही साथ, राष्ट्रवादियों की एक मांग मानने में ब्रिटिश सरकार की असफलता ने राजनीति चेतना-प्राप्त लोगों में उस समय वर्चस्व प्राप्त नरमपंथी नेतृत्व के सिद्धांतों व विधियों के प्रति असंतोश पैदा कर दिया था। नरमपंथी राष्ट्रवादियों की मांगें मानने की जगह ब्रिटिश शासक उनकी हंसी उड़ाते और उन्हें नीची निगाहों से देखते थे। परिणामस्वरूप सभाओं,

प्रार्थनापत्रों, स्मरणपत्रों और विधायिकाओं में भाषणों की जगह और भी जोरदार राजनीतिक कार्रवाइयों और तरीकों की मांगें उठने लगीं।

ब्रिटिश शासन के सही चरित्र की पहचानः

नरमपंथी राष्ट्रवादियों की राजनीति इस विश्वास पर आधारित थी कि ब्रिटिश षासन को अंदर से सुधारा जा सकता है। लेकिन राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नों से संबंधित ज्ञान जब फैला धीरे-धीरे यह विश्वास टूट गया। इसके लिए काफी बड़ी हद तक नरमपंथियों का आंदोलन स्वयं उत्तरदायी था। राष्ट्रवादी लेखकों और आंदोलनकारियों ने जनता की निर्धनता का दोषी ब्रिटिश शासन को ठहराया। राजनीतिक रूप से चेतन भारतीयों को विश्वास था कि ब्रिटिश शासन का उद्देश्य भारत का आर्थिक शोषण करना, अर्थात, भारत की संपत्ति से इंग्लैंड को समृद्ध बनाना है। उन्हें महसूस हुआ कि जब तक भारतीयों द्वारा नियंत्रित और संचालित कोई सरकार क्षेत्र में भारत षायद ही कुछ प्रगति कर सके। राश्ट्रवादियों ने खासकर यह भी देखा कि भारत के उद्योग तब तक फल-फूल नहीं सकते जब तक कि उन्हें सुरक्षा और प्रोत्साहन देने वाली कोई भारतीयों की सरकार न हो। भारत में १८९६ और १९०० के बीच जो भयानक अकाल फूटे और जिनमें ९० लाख से ऊपर लोग मरे, वे जनता की दृष्टि में विदेशी षासन के आर्थिक दुश्परिणामों के जीते-जागते प्रतीक थे।

१८९२ और १९०५ के बीच घटित राजनीतिक घटनाओं ने भी राष्ट्रवादियों को निराश करके उन्हें और भी उग्र राजनीति के बारे में सोचने को बाध्य किया। १८९२ का इंडियन कौंसिल एक्ट, घोर निराशा का कारण सिद्ध हुआ दूसरी, ओर जनता को जो थोड़े से राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे, उन पर भी हमले किए गए। १८९८ में एक कानून बनाया गया जिसमें विदेशी शासन के प्रति ''असंतोष की भावना फैलाने को अपराध घोषित किया गया। १८९९ कलकत्ता नगर निगम में भारतीय सदस्यों की संख्या घटा दी गई। १९०४ में इंडियन आफिशियल सेक्रेट्स एक्ट बना जिसने प्रेस की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। १८९७ में नाटू भाइयों को बिना मुकद्दमा चलाए देश बाहर कर दिया गया और उन पर लगाए गए आरोपों तक को भी जनता को नहीं बतलाया गया। उसी वर्ष लोकमान्य तिलक और दूसरे समाचारपत्र-संपादकों को विदेशी सरकार के प्रति जनता को भड़काने के लिए लंबी-लबी जेल-सजाएं दी गई। इन सबसे जनता का लगा कि सरकार और भी अधिक राजनीतिक अधिकार देने के बजाए उन्हें मिले थोड़े से अधिकार भी छीने ले रही थी लार्ड कर्जन के कांग्रेस-विरोधी दृष्टिकोण ने अधिकाधिक लोगों को विश्वास दिलाया कि भारत में प्रगति की आशा करना व्यर्थ है। यहां तक कि ''नरमपंथी खुलकर स्वार्थी और राष्ट्रीय आकांक्षाओं की षत्रु बनती जा रही है।''

सामाजिक-सांस्कृतिक दृश्टिकोण से भी बिट्रिश शासन अब प्रगतिशील नहीं रहा था। प्राथमिक और तकनीकी शिक्षा में कोई प्रगति नही हो रही थी। साथ ही अधिकारीगण उच्च शिक्षा के प्रति शंकित हो रहे थे और देश में उसके प्रसार में बाधा डालने की कोशिश तक कर रहे थे। १९०४ के भारतीय विश्वविद्यालय कानून से राष्ट्रवादियों को लगा कि भारत के विश्वविद्यालयों पर और भी सख्त सरकारी नियंत्रण स्थापित करने तथा उच्च शिक्षा का प्रसार रोकने का प्रयास किया जा रहा है।

इस तरह अधिकाधिक संख्या में भारतीयों को विश्वास होता जा रहा था कि देश की आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रगति के लिए स्वशासन आवष्यक है और राजनीतिक पराधीनता का मतलब भारतीय जनता के विकास का अवरूद्ध होना है।

आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का प्रसार-

१९वीं सदी के अंत तक भारतीय राष्ट्रवादियों का आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बहुत बढ़ा था। उन्हें अपना शासन आप कर सकने तथा देश का विकास कर सकने की अपनी क्षमता में विश्वास हो चुका था। तिलक, अरविंदघोष और बिपिनचंद पाल जैसे नेताओं ने राष्ट्रवादियों को आत्मविश्वास का संदेश दिया और उनसे आग्रह किया कि वे भारतीय जनता के चरित्र व क्षमताओं पर भरोसा करें। उन्होंने जनता को बतलाया कि उनकी दुर्दशा का हल उनके अपने हाथों में है और इसके लिए उन्हें निर्भय और बलवान होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद कोई राजनीतिक नेता न थे, मगर यह संदेश उन्होंने

बार-बार दिया। उन्होंने घोषणा की दुनिया में अगर कोई पाप है तो वह निर्बलता है। निर्बलता का त्याग करो। निर्बलता पाप है और निर्बलता मृत्यु है सत्य की कसौटी यह है कोई भी वस्तु अगर तुम्हें शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से निर्बल बनाती है तो उसे विष समझ उसका त्याग करो कि उसमें कोई जीवन नहीं है, और वह सत्य नहीं हो सकती।

उन्होंने जनता से यह भी कहा कि वह अतीत के महिमामंडन के भरोसे जीना छोड़ें और मर्दो की तरह भविष्य का निर्माण करें। उन्होंने कहा, ''हे भगवान् हमारा यह देश अतीत के ऊपर अपनी शाश्वत निर्भरता से कब मुक्त होगा?''

आत्मप्रयास में इस विश्वास के कारण राष्ट्रीय आंदोलन का विस्तर करने की आकांक्षा भी जागी। यह विचार फैला कि अब राष्ट्रवाद क उद्देश्य को ऊंचे वर्गो के थोड़े से शिक्षित भारतीयों तक अब और सीमित नहीं रहना चाहिए। इसके बजाए, जनता की राजनीतिक चेतना को उभारा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए स्वामी विवेकानंद ने लिखाः ''भारत की एकमात्र आशा उसकी जनता है। ऊंचे वर्ग शारीरिक और नैतिकदृष्टि से मृतप्राय है'' यह महसूस किया जाने लगा था कि स्वाधीनता पाने के लिए जो व्यापक बलिदान आवश्यक है वह केवल जनता ही कर सकती है।

शिक्षा और बेरोजगारी में वृद्धिः

१९वीं सदी के अंत तक शिक्षित भारतीयों की संख्या में स्पष्ट वृद्धि हुई थी। उनका एक बड़ा भाग प्रशासन में बहुत कम वेतन पर काम कर रहा था और दूसरे बहुत से लोग बेरोजगार घूम रहे थे। अपनी आर्थिक स्थिति के कारण ये लोग ब्रिटिश सरकार के चरित्र को आलोचनात्मक दृष्टि से देखने लगे। उनमें से अनेक उग्र राष्ट्रवादी नीतियों से आकर्षित हुए।

इससे भी महत्वपूर्ण था शिक्षा-प्रसार का विचारधारात्मक पक्ष। शिक्षित भारतीयों की संख्या जितनी बढ़ी, उतना ही लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और आमूल परिवर्तन के पश्चिमी विचारों का प्रभाव भी फैला। ये शिक्षित भारतीय उग्र राष्ट्रवाद के बेहतरीन प्रचारक और अनुयायी सिद्ध हुए। इसके दो कारण थे-वे कम वेतन पाने वाले या बेरोजगार थे, और साथ ही आधुनिक विचार प्रणाली और राजनीति की तथा यूरोपीय और विष्व इतिहास की शिक्षा भी उन्हें मिली थी।

अंतर्राष्ट्रीय प्रभावः-

इस काल अनेक विदेशी घटनाओं ने भी भारत में उग्र राष्ट्रवाद के विकास को प्रोत्साहित किया। १८६८ के बाद एक आधुनिक जापान के उदय ने दिखा दिया कि एक पिछड़ा हुआ एशियाई देश भी बिना किसी पश्चिमी नियंत्रण के अपना विकास कर सकता है। कुछ ही दशकों के काल में जापान के नेताओं ने अपने देश को पहले दर्जे की औद्योगिक ओर सैनिक षक्ति बना दिया था, वपक प्राथमिक शिक्षा का आरंभ किया था और एक सक्षम और आधुनिक प्रशासन खड़ा किया था और एक सक्षम और आधुनिक प्रशासन खड़ा किया था। १८९६में इथियोपिया के हाथों इटली की सेना तथा १९०५ में जापान के हाथों रूस की हार ने यूरोपीय श्रेश्ठता के भ्रम को तोड़कर रख दिया। एशिया में हर जगह एक छोटे से एशियाई देश के हाथों यूरोप की सबसे बड़ी सैनिक षक्ति की पराजय की खबर को उत्साह के साथ सुना।

१८ जून १९०५ को 'कराची क्रोनिकल' नामक समाचारपत्र ने जनता की भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त किया : जो कुछ एक एशियाई देश ने किया है वह दूसरे भी कर सकते हैं अगर जापान रूस की धुनाई कर सकात है तो भारत भी उतनी ही आसानी से इंग्लैंड को धुन सकता है आइए, हम अग्रेजों को समुद्र में फेंक दें और विश्व की महान शक्तियों के बीच जापान क बराबर अपना स्थान ग्रहण करें।

आयरलैंड, रूस मिश्र, तुर्की और जापान के क्रांतिकारी आंदोलनों तथा दक्षिण अफ्रीका के बोअर युद्ध ने भारतीयों को विष्वास दिला दिया कि अगर जनता एकजुट और बलिदान के लिए तैयार हो तो शक्तिशाली निरंकुश सरकारों को भी चुनौती दे सकती है। जिस बात की सबसे अधिक आवश्यकता थी वह थी देशभक्ति और आत्मबलिदान की भावना।

उग्र राष्ट्रवादी विचार-संप्रदाय का अस्तित्वः

राष्ट्रीय आंदोलन के लगभग आरंभ से ही उग्र राष्ट्रवाद का एक संप्रदाय देश में मौजूद था। इस संप्रदाय के प्रतिनिधि बंगाल में राजनारायण बोस और अश्विनीकुमार दत्त तथा महाराष्ट्र में विष्णु शास्त्री चिपलुंकर जैसे नेता थे। इस संप्रदाय के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि बाल गंगाधर तिलक थे जिन्हें आम तौर पर लोकमान्य तिलक कहते हैं। उनका जन्म १८५६ में हुआ था। बंबई विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने के बाद से ही उन्होंने पूरा जीवन देश-सेवा के लिए समर्पित कर दिया। १८८० के बाद के दशक में उन्होंने न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना में भाग लियाः यही स्कूल बाद में फर्ग्यूसन कालेज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने अंग्रेजी में 'मरहठा तथा मराठी में 'केसरी' नामक पत्रों की स्थापना की। १८८६ से वे केसरी का संपादन करने लगे और इस पत्र के पृष्ठों में वे राष्ट्रवाद का प्रचार करने लगे। उन्होंने जनता को भारत की स्वाधीनता के लिए साहसी, स्वावलंबी और निःस्वार्थ योद्धा होने का पाठ पढ़ाया। १८९३ में उन्होंने एक परंपरागत धार्मिक उत्सव, अर्थात गणपति उत्सव का उपयोग गीतों और भाषणों के द्वारा राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार के लिए करना आरंभ आरंभ कर दिया १८९५ में उन्होंने शिवाजी उत्सव का आयोजन आरंभ किया। इसका उद्देश्य महाराश्ट्रीय युवकों के आगे अनुकरण के लिए शिवाजी का उदाहरण सामने रखकर उनमें राष्ट्रवाद की भावना पैदा करना था। १८९६-९७ में उन्होंने महाराष्ट्र में कर न चुकाने का अभियान चलाया। उन्होंने महाराष्ट्र के अकाल-पीड़ित किसानों से कहा कि अगर उनकी फसल चौपट हो जाए तो वे मालगुजारी न दें। जब सरकार के खिलाफ घृणा और अंसतोष भड़काने के आरोप में अधिकारियों ने उन्हें १८९७ में गिरफ्तार किया तो उन्होंने दिलेरी और बलिदान का एक शानदार उदाहरण दिलेरी और बलिदान का एक शानदार उदाहरण सामने रखा। उन्होंने सरकार से क्षमा मांगने से इंकार कर दिया जिस पर उन्हें १८ महीनों की कड़ी कैद की सजा हुई। इस तरह वे आत्मबलिदान की नई राष्ट्रीय भावना के जीते-जागते प्रतीक बन गए।

निष्कर्षः-

राष्ट्रीय आंदोलन के लगभग आरंभ से ही राष्ट्रवाद का एक संप्रदाय देश में मौजूद था। इस तरह सांस्कृतिकता के साथ राष्ट्रवाद को आंदोलनों, उत्सवों, समारोहो के माध्यम से जनजागृति लाई गई यह भारत की आजादी के लिए किया गया अनूठा प्रयास था। अतः इससे २०वीं सदी के आरंभ में उग्र राष्ट्रवादी संप्रदाय को एक अनुकूल राजनीतिक वातावरण प्राप्त हुआ।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. आधुनिक भारत-विपिन चंद्र-अनुवादक ष्याम बिहारी राय NCERT (प्र.सं.१९९०)।
2. आधुनिक भारत का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक इतिहास-डॉ.एस.एल.नागौरी,जीतेश नागौरी-यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा.लि.जयपुर।(प्र.स.२००४)
3. आधुनिक भारत का इतिहास-पंचशील प्रकाशन जयपुर (प्र.सं. १९९९)।

डॉ. डी. पी. ग्वालवंशी
सहायक प्राध्यापक (इतिहास-विभाग) , शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी (म०प्र०)